उदयचन्द्र झा 'विनोद'

उदयचन्द्र झा 'विनोद' मैथिलीक साहित्यकारमे 'विनोदजी' क नामसँ प्रसिद्ध छथि। जेहने स्वच्छ स्वभाव, तेहने साफ लेखन। हिनक जन्म 5 अप्रैल, 1943 कऽ भेलनि। जन्मस्थान छनि दुलहा गाम (मधुबनी), मुदा वासी छथि रहिका गामक। भारत सरकारक ए. जी. औफिसमे उच्च पदस्थ अधिकारीक रूपमे सेवानिवृत भेलाक बाद मिथिला विश्वविद्यालयमे वित्त पदाधिकारीक रूपमे कार्यरत छथि।

'विनोद' कथा, नाटक, निबन्ध आदि अनेक विधामे लेखन कयने छथि, किन्तु कविक रूपमे हिनक ख्याति सर्वाधिक अछि। मूलत: आ मुख्यत: ई कविए छथि। हिनक दसटा काव्य-संकलन प्रकाशित अछि। आजुक स्थितिसँ जुड़ल हिनक सहज आ सरल कविता लोकक लेल अत्यन्त आकर्षक ओ मनमोहक होइत अछि। इएह कारण अछि जे हिनक कविता जतबे पढ़ल जाइत अछि ततबे सुनलो जाइत अछि। कवि सम्मेलनोमे ई खूब जमैत छथि। माटिपानि, लोकवेद, घर-बाहर आदि पत्रिकाक यशस्वी सम्पादकक रूपमे हिनक प्रसिद्धि छनि। हिनका यात्री चेतना पुरस्कार तथा मिथिला विभूति सम्मान भेटल छनि।

काव्य सन्दर्भ -'कहलनि पत्नी' नामक कविता-संग्रहसँ संकलित प्रस्तुत कवितामे बच्चाक महत्त्व देखाओल गेल अछि। बच्चा ओ आधार अछि जे व्यक्तिगत रूपमे माय-बापेकेँ नहि, सामूहिक रूपमे सम्पूर्ण सृष्टिकेँ विकसित होयबाक, फुलयबाक आ फड़बाक अवसर दैत अछि। बच्चा नहि रहत तऽ मनुक्ख नहि रहत, संसार नहि रहत। बच्चा संघर्षशील बनबैत अछि। जीबाक लेल स्नेह-रागक भावना भरैत अछि। तेँ बच्चाक महत्त्व बुझबाक चाही। ओकर विकास लेल सतत सचेष्ट रहक चाही। बच्चाक स्वास्थ्य आ पढ़ाइ-लिखाइ पर ध्यान देबाक चाही। कवि एहि कवितामे उपदेश नहि, सन्देश दैत छथि जे अत्यन्त हृदयग्राही अछि। जीवन आ जगतक स्थायित्व तथा विकासक मूलमंत्र बच्चा अछि।

बच्चा

जीवाक लेल, जगत लेल
आवश्यक होइछ बच्चा
वर्त्तमान होइछ- भविष्य होइछ
जीवनक अर्थ होइछ बच्चा
ओ बकलेल छथि जे कहैत छथि
बच्चा कें व्यर्थ।

संघर्षरत जीवनक नारा होइछ
बुढ़ापाक सहारा होइछ
जीवन-धाराक कूल-प्रकृतिक वनफूल
सृष्टिक अनुकूल होइछ बच्चा
ओ ढहलेल छथि जे एकरा
बूझथि जानक जपाल
ओ कंगाल छथि।

बच्चा जीवनक मिठासे नहि
कोतवाल हाथक गड़ाँसो होइछ
सम्बन्ध - सरोकार
तमाम कारोबारक प्रेरणा होइछ बच्चा
जीवनाकाशक ध्रुवतारा
दिशा-दशाक ज्ञान दैछ
जीवन कें मान दैछ बच्चा।

बच्चा कैँ ओहिना नहि कहल
गेल छल भगवान
ओहिना नहि प्रिय भेल बाललीला
बच्चा संधान होइछ
परम्पराक कड़िए टा नहि
सन्तान होइछ बच्चा
बच्चा नहि तऽ किछु नहि
कतहु नहि
ककरो नहि।

शब्दार्थ

बकलेल : बुड़िबक , अज्ञानी
ढहलेल : बकलेल, अज्ञानी
संधान : अन्वेषण खोज

प्रश्न ओ अभ्यास

1. वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

(i) 'बच्चा' केर रचयिता छथि
(क) सुकान्त सोम (ख) उदयचन्द्र झा 'विनोद'
(ग) बुद्धिनाथ मिश्र

(i) उदयचन्द्र झा 'विनोद'क रचना छनि
(क) रौदी अछि (ख) बच्चा
(ग) हाथ (घ) वन्दना

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू :
(i) जीवनक अर्थ होइछ ..... ।
(ii) ..... सहारा होइछ ।

(iii) दिशा-दशाक ..... दैछ ।

(iv) बच्चा नहि तऽ ..... नहि ।

3. लघूत्तरीय प्रश्न-

(i) बच्चा ककरा कहल जाइछ ?

(ii) बच्चाक की अर्थ अछि ?

(iii) बच्चा बुढ़ापाक सहारा कोना होइछ ?

(iv) बच्चाकेँ जीवनक ध्रुवतारा कहल जाइछ किनका ?

(v) बाललीला किएक प्रिय भेल।

4. दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

(i) बच्चाक महत्ता पर प्रकाश दिअ।

(ii) पठित पाठक सारांश लिखू।

(iii) 'बच्चा' शीर्षक कविताक भाव लिखू।

(iv) पठित कवितामे कवि की कहय चाहैत छथि ?

(v) बच्चा परम्पराक कड़ी थिक - विवेचना करू ।

5. सप्रसंग व्याख्या करू :

(i) जीवाक लेल, जगत लेल
आवश्यक होइछ बच्चा
वर्त्तमान होइछ- भविष्य होइछ
जीवनक अर्थ होइछ बच्चा

(ii) बच्चा केँ ओहिना नहि कहल
गेल छल भगवान
ओहिना नहि प्रिय भेल बाललीला
बच्चा संधान होइछ

गतिविधि -

1. 'बच्चा' पर कविता कोनो आओर कवि लिखने छथि ? ताकू।
2. बच्चा देश व समाजक भविष्य होइछ। छात्र लोकनि पक्ष व विपक्षमे अपन-अपन तर्क देथि ।
3. वीर बालकक कथा छात्र वर्गमे सुनाबथि।
4. भगवानक बाललीला पर आधारित लघु एकांकीक मंचन करू।
5. बच्चाक सामान्य दशाक वर्णन करू।

निर्देश -

1. शिक्षक छात्रकेँ वीर बालकक कथा सुनाबथि ।
2. वीर बालक पर आधारित कोनो कविताकेँ शिक्षक सस्वर पाठ कऽ सुनाबथि।
3. बालक देशक भविष्य होइछ-विस्तारपूर्वक शिक्षक छात्रकेँ अवगत कराबथि।
4. कृष्णक बाललीलाक कथाक चर्चा छात्रक बीच करथि।
5. एकलव्य, अभिमन्यु आदिक कथासँ छात्रकेँ परिचित कराबथि।